[Total No. of Printed Pages : 4] अनुक्रमांक.....

MASL - 202

गद्य एवं पद्य काव्य

एम.ए. संस्कृत (एमएएसएल-12/16/17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2020

समय : 2 घंटे पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है। जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल कीजिए।

खण्ड-'क'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड-'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बीस (20) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×20=40)

1. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्वमेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुहयकस्तंययाचे,
कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणास्थेतनाचेतनेषु।।

(ख) नीवं दृष्ट्वा हरित कपिशं केशरैरर्धरूढै
राविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्।
जग्हवारण्येष्वधिक सुरभिं गन्धमाध्रापचोर्त्याः
सारंगास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम्।।

(ग) आसीनानां सुरभितषिलं नाभिगन्धैर्मृगाणां
तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौरं तुशारैः।
वक्ष्यस्यध्वश्रमविनयने तस्य श्रृंगे निषण्णः
शोभां शुभ्रत्रिनयनवृशोत्खातपंकोपमेयाम्।।

2. निम्नलिखित गद्यांश में से किसी **एक** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :

(क) अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः। एष भगवान मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपकों ब्रहमाण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविभोकः कोकलोकस्य अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्चदिनस्या। अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृत्नांम्, एष एवाङ्गोकदोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः, एनेनैव कृताः कल्पभेदाः एनमेवाश्रित्य भवति पदमेष्ठिनः परार्द्ध

संख्या, असावेवचर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति च जगत्, वेदा एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गायति, ब्रहमनिष्ठां ब्राहमणा अमुमेवाहरहरुपतिष्ठन्ते।

(ख) अहो दुर्गमता महाराष्ट्रदेशस्य! अहो दुर्घर्षतां महाराष्ट्राणाम्, अहो वीरता शिववीरस्य अहो निर्भयता एतत्सेनानीनाम्, अहोत्वरितगतिरेतद्धोटकानाम्, आः किं कथयायः? दृष्ट्वैव चमत्कारं शिववीर-चन्द्र हासस्य न वयं पारयायो धैर्यं धर्तुम्, नच शक्नुमो युद्ध स्थाने स्थातुम्, को नाम द्विशिरा यः शिवेन योद्धुं गच्छेत्? कश्चनाम द्विपृष्ठो यस्तद्भटैरपि छलालापं विदध्यात्? वयं बलिनः अस्माकीना महती सेना, तथापि न जानीमः, किमिति कम्पत इव क्षुभ्यतीव च हृदयम्? यवनानां पराजयो भविष्यति, अफजल खानो विनश्यति इति न विद्रयः को जयतीवं कर्णे, लिखतीव सम्मुखे क्षिपतीव चान्तः करणे।

3. पूर्वमेघ के आधार पर कविकालिदास के प्रकृति चित्रण को सप्रमाण प्रस्तुत कीजिए।

4. कविवर अम्बिकादत्तव्यास के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए शिवराज विजय की भाषा शैली का निरूपण कीजिए।

5. पूर्वमेघ के आलोक में मेघ की सन्देश यात्रा का वर्णन सप्रमाण कीजिए।

खण्ड-ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड-'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस (10) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×10=40)

1. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।
2. पूर्वमेघ के आधार पर कवि कालिदास के प्रकृति प्रेम पर टिप्पणी लिखिए।
3. ''सद्यः पाति प्रणय हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि'' सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।
4. ''के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारभ्भ यत्नाः'' उक्त सूक्ति के आधार पर कविवर के नीतिज्ञान का वर्णन कीजिए।
5. शिवराज विजय के आलोक में भारत की दुर्दशा का वर्णन कीजिए।
6. पं. अम्बिकादत्त व्यास की गद्य काव्यशैली का सप्रमाण वर्णन कीजिए।
7. शिवराज विजय में वर्णित छत्रपति शिवाजी के युद्ध कौशल का वर्णन कीजिए।
8. शिवराज विजय उपन्यास वर्तमान युवापीढ़ी को क्या प्रेरणा देता है। अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

****